शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

रामस्नेही सम्प्रदाय में संत साहित्य का विहंगमावलोकन

अंकिता दाधीच (शोधार्थी)
डॉ.रजनीश शर्मा (शोध निर्देशक)
संगम विश्वविद्यालय
भीलवाड़ा, राजस्थान, भारत

शोध सार

भारत भूमि प्राचीन काल से ही संतों की भूमि रही है जहाँ संतों ने अपने सुविचारों से इस वसुधा के लोगों को पावन सन्देश दिया है तथा उनका मार्ग प्रशस्त किया है। ये सन्तों का ही प्रभाव रहा है कि हमारा देश 'अखण्ड भारत' व 'विश्वगुरु' कहलाया। संत वह है जो व्यक्ति को सही मायनों में जीने का मार्ग बताते हैं, जो स्वार्थ त्यागकर परहित का उपदेश देते हैं, जो व्यक्ति में आनन्द और प्रेरणा का भाव उत्पन्न करते हैं।

'संत' वह है जो व्यक्ति के केन्द्र से ऊँचे उठकर समष्टि जीवन के प्रति आस्थावान होते हैं, जो स्वार्थ को त्यागकर सामूहिक हित की बात सोचते हैं। ऐसे व्यक्ति का जीवन नीरस और शून्य नहीं होता, वह दिव्य आनन्द से प्लावित एवं अक्षय प्रेरणा से संचालित होता है।"[1]

ऐसे ही एक संत हुए स्वामी रामचरण जी।

मधुकर को मकरंद लुटाकर, फूल सदा सौरभ देता है।
इसी वृत्ति से संत मनुज को हर चाहत का नभ देता है।।
सृष्टि वृष्टि के लिए व्योम में मेघों का संधारण करती।
इसी हेतु से कुक्षि धरा की, रामचरण अवतारण करती।।

इनके साहित्य में जीव और शिव के एक होने की बात कही गई है। इनकी कृतियों में यह दृष्टिकोण ध्यान में रखना समीचीन होगा।

स्वामी रामचरण की कृतियाँ

स्वामी रामचरण की 12 वर्ष की साधना के फलस्वरूप समस्त ग्रन्थों का एक संग्रह 'श्री रामचरण जी महाराज की अणभैवाणी' नाम से वि.सं.1981 में प्रकाशित हुई। इसे शाहपुरा पीठ के आचार्य श्री निर्भयराम जी ने स्वीकृति प्रदान की तथा बड़ौदा प्रिन्टिंग प्रेस से इसे प्रकाशित करवाया गया।

इसकी प्रस्तावना इस प्रकार है, "अपने भक्तों की यह हार्दिक प्रार्थना सुन और उनका दृढ़ संकल्प देख श्री महाराज ने दया कर के इस ग्रन्थ रत्न के छपने की स्वीकृति प्रदान की और आचार्य महाप्रभु की आज्ञा के अनुसार यह ग्रन्थ रत्न बड़ौदा प्रिन्टिंग प्रेस में साध नैनूराम जी दोनूं आदि ने छपाकर संसार के कल्याणार्थ प्रसारित किया।"[2] इसे रामचरण जी की अणभैवाणी के नाम से जाना गया। इस ग्रन्थ में इनकी 24 कृतियाँ संगृहीत हैं।

'अणभैवाणी में श्री सन्तदास, श्री रामजन, श्री जगन्नाथ तथा श्री जनगोपाल आदि संतों की रचनाएँ भी हैं। रामद्वारों में इस ग्रन्थ का नियमित पाठ होता है।

कृतियों के लिपिकार

24 कृतियों में स्वामी रामचरण की हस्तलिपि में कोई रचना नहीं पाई गई है। स्वामी रामचरण वाणी कहते गए और उनके प्रमुख दो शिष्य श्री नयनराम एवं श्री रामजन उन्हें लिपिबद्ध करते गए। यह प्रस्तावना से ज्ञात होता है।

'रामजन पारायण निर्विकल्प समाधिस्थ निखिल शास्त्र निष्णान्त श्री वीतराग महाप्रभु शाहपुरा में विराजकर तथा पर्यटन काल में अपने स्वयं अनुभव से और सद्शास्त्रों के प्रमाणों से जो महाकाव्य उच्चारण किये उनको आपके शिष्य भीलवाड़ा ग्राम निवासी माहेश्वरी वंशोद्भव नवलराम जी ने लिखकर संग्रह किया। जिसकी संख्या अंगबद्ध 8000 श्लोक है। तदन्तर 28367 ग्रन्थ संख्या श्रीमान् वीतराग के शिष्य परम पवित्र अद्वेत नेष्ठिक श्री रामजन ने संग्रह किया। इस प्रकार इस ग्रन्थ की संख्या 36390 है।"[3] 'श्री नवलराम तथा श्री रामजन स्वामी रामचरण के प्रधान 12 शिष्यों में से थे।"[4] इनमें से श्री रामजन तो स्वामी रामचरण के निधन के पश्चात् प्रथम पीठाचार्य हुए हैं। इनका जन्म संवत् 1795 में तथा मृत्यु संवत् 1867 आषाढ बदी 11 बुधवार को हुई।[5] परन्तु श्री नवलराम के जन्म-मृत्यु आदि के सम्बन्ध में कहीं जानकारी नहीं मिलती है, परन्तु संवत् 1827 मे रामचरण जी की अणभैवाणी शब्द व गावा के पदों को इन्होंने लिपिबद्ध किया जिसका उल्लेख अणभैवाणी में इस प्रकार है :

संवत् अठारा से सही सताई से जोय।
फागुन बदि द्वादशी, वार सोम ही होय।
शाहपुरा मधि सोधि के सब वाणी विस्तार।
नवलराम अंग बांधियाँ जन पदरज सिर धार।।"[6]

तथ्यों के आधार पर यह तर्कसंगत है कि स्वामी रामचरण के जीवनकाल में ही दोनों लिपिकार ने उनकी वाणी को लिपिबद्ध किया। अतः यह कहा जा सकता है कि इसमें किसी प्रकार का संशोधन उनके शिष्यों द्वारा नहीं किया गया है।

कृतियों का वर्गीकरण

स्वामी जी की रचनाओं को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है :

1 वाणी साहित्य, 2 ग्रन्थ साहित्य, 3 फुटकर साहित्य

इन्हें इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है :

1 वाणी साहित्य :

स्वामी रामचरण की वे सभी रचनाएँ जो अंगबद्ध रूप है इसके अन्तर्गत आती है। जिसमें एक ही छन्द में विभिन्न अंगों की रचना एवं अलग-अलग छन्द में एक अंग की रचना सम्मिलित है। इस प्रकार निम्न रचनाएँ इसके अन्तर्गत समाविष्ट है :

1 अणभैवाणी, 2 गुरुमहिमा, 3 नाम प्रताप, 4 शब्द प्रकाश, 5 चिन्तावाणी, 6 मन खण्डन, 7 गुरु शिष्य गोष्ठी, 8 ठिग पारख्या, 9 बेजुक्ति तिरस्कार, 10 काफर बोध, 11 लच्छ अलच्छ जोग, 12 पंडित संवाद,

शब्द–ब्रह्म E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

13 जिद पारख्या, 14 दृष्टान्त सागर, 15 शब्द

ये सभी रचनाएँ स्वामी रामचरण जी की अणभैवाणी में संगृहीत है, परन्तु चूंकि ये सभी रचनाएँ वाणी साहित्य के अन्तर्गत आती हैं, अतः इन्हें एक ग्रन्थ के रूप में कहा जा सकता है।

2 ग्रन्थ साहित्य

जिनकी रचना प्रकरण, प्रकाश और विश्राम शैली में हुई है ग्रन्थ साहित्य में उन्हें समाविष्ट किया गया है। इसमें निम्न ग्रन्थ आते हैं :

1 अणभैविलास, 2 जिज्ञासा बोध, 3 विश्वास बोध, 4 अमृत उपदेश, 5 सुख दिलास, 6 विश्राम बोध, 7 समता निवास, 8 राम रसायन बोध।

3 फुटकर पद.

'गावा का पद' नामक रचना फुटकर पद के अन्तर्गत सम्मिलित है।

1 अणभैवाणी :

स्वामी रामचरण जी महाराज की 'अणभैवाणी', 'अनुभव वाणी', सन्त साहित्य में उसी प्रकार अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है, जिस प्रकार कबीर, दादू, नानक, मलूकदास, गरीबदास आदि की वाणियाँ रखती हैं। इसमें संत साहित्य की परम्परानुसार ही साखी, दोहा, चन्द्रायण, सवैया, झूलना, कवित्त, कुण्डल्याँ एवं रेवता छन्दों द्वारा 234 अंगों में भाव, विचार एवं दर्शन की त्रिवेणी प्रवाहित हुई है।

वर्ण्य विषय

'समस्त वाणी को अलग-अलग विषयों के शीर्षकों से अंगबद्ध कर दिया गया है। निर्गुण साहित्य में यही पद्धति ग्रहीत है।"[7] दूसरे सन्तों की अपेक्षा इसमें नवीन अंगों का भी समावेश किया गया है। 'ब्रह्म', जीव और जगत् सम्बन्धी कोई बात छूटने नहीं पाई है। सम्पूर्ण वाणी आत्म कल्याण के लक्ष्य की ओर उन्मुख है। इसमें कहीं भी शैथिल्य नहीं है।"[8] "अंगबद्धता के दृष्टिकोण से समस्त वाणी को समुचित रूप में इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है।"[9]

1 **साखी के** 74 **अंग**

गुरुदेव, गुरु, समर्थाइ, सुमरण, शिवधर्म, विनती, विरह, ज्ञान विरह, लेको, प्रेम प्रकाश, पीव पिछांण, प्रचा, पतिव्रता, व्यभिचारिणी, विनती क्रिया, समर्थाई, विश्वास, विरक्त, निवृति साध असाध, साध संगति, कुसंगति, अकल, बेअकल, विचार, बेविचार, नहचे, जीवत मृतक सजीवण, सारग्राही, अवगुण ग्राही, अज्ञानी, राम विमुख, काल, चिन्तावणी, उपदेश, जिज्ञासा, गुरु पारख, शिष्य पारख, गुरु शिष्य पारख, सन्मुख बेमुख, चितकपटी, देखा देखी कायर, शूरातन, टेक, हेतु प्रीति, कस्तूरिया मृग, मन, सती, बेहद, मध्य, निरपख पंख रस, सूक्ष्म मार्ग, शुभ कर्मी, दया, माया, कामीनर, जरण रहत, सहण बहु आरंभीण् लोभी नर, आशावेलो, निद्रा, भुरकी, निंदा, सांचा प्रेम, विध्वंस भेष, चाणक।

2 **चन्द्रायण के** 24 **अंग**

गुरुदेव, सुमरण, समर्थाई, विनती, विरह, प्रचा, साध महिमा, साध, साध संगति, विरक्त, गुरु पारख, शिष्य पारख, गुरुहेत, गुरु बेमुख, सन्मुख, बेमुख, मनमुखी, अज्ञानी काल, चिंतावणी, शूरातण, विचार, तृष्णा, सांच और भेष।

3 **सवैया के** 26 **अंग**

गुरुदेव सुमरण, नाम महिमा, प्रचा, विचार, साध, साध संगति, विरक्त, विश्वास, तृष्णा, लोभी नर, अज्ञानी, काल, चिन्तावणी, सन्मुख, बेमुख, गुरु बेमुख, अवगुण ग्राही, चित कपटी, व्यभिचारिणी, कावर, शूरातण, कामीनर, सांचए भ्रम विध्वंस, भेष और चाणक।

4 **झूलण के** 7 **अंग**

गुरुदेव, सुमरण, विचार, साध संगति, उपदेश, विरक्त और भेष।

5 **कवित्त के** 44 **अंग**

गुरुदेव, सुमरण, नाम समर्थाई, प्रचा, पतिव्रता, व्यभिचारिणी, विनती, विश्वास, तृष्णा, निरपख, निर्गुण उपासना, साध असाध, साध संगति, कुसंगति, साध पारख, साध महिमा, वाचक ज्ञानी, लच्छ ज्ञानी, अज्ञानी, ब्रहम विवेक, काल चिन्तावणी, मन, मनमूसा मनसूब, कायर, शूरापण, उपदेश, जिज्ञासा, शिख पारख, शिष्य निरणा टेक, विचार, निरणा, हठयोग, भक्ति महिमा, माया, कामीनर रहत, जरणा, सांच, भ्रम, विध्वंस, भेष और चाणक।

6 कुण्डलिया के 44 अंग

गुरुदेव, गुरु परमारथी, लोभी गुरु, सुमरण, विनती, प्रचा, पतिव्रता, व्यभिचारिणी, कायर, शूरातन, सती, विश्वास, बेविश्वास, निरपख, विरक्त, निरगुण उपासना, साध, साध परख, साध संगति, कुसंगति, दया, लच्छ, उपदेश, जिज्ञासा, गुरुशिष्य पारख, शिष्य पारख, गुरु बेमुख, राम विमुख, सन्मुख बेमुख, अज्ञानी, विचार, निरणा, लोभी नर, काल, चिन्तावणी, मन हठयोग, माया, कामी नर, निंदा, सांच, भ्रम विध्वंस, भेष और चाणक।

7 **रेवता के** 15 **अंग**

गुरुदेव, भेष धारण, सुमरण, नाम निरणा, प्रेम प्रकाश, प्रचा, विचार, शूरातण, सारग्राही, चिंतावणी, असाध, कामीनर, सांच, भेष और चाणक।

उपर्युक्त अंगबद्ध वर्गीकरण अणभैवाणी का वर्ण्य-विषय स्पष्ट करता है।

रचनाकाल

अणभैवाणी की रचना संवत् 1820 में हुई तथा श्री नवलराम ने इसे लिपिबद्ध किया। इसका उल्लेख वाणी के अन्त में मिलता है :

"अठारा से अरु बीस वर्ष वाणी जु उचारा।
नवलराम सब झेल फेरिह पुस्तक विस्तारा।।"[10]

शैली

'अणभैवाणी' में व्यावहारिक व आध्यात्मिकता से संबंधित सभी पक्षों का तथ्य निरुपक व उपदेशात्मक शैली में विवेचन हुआ है।

स्वामी रामचरण ने लोकभाषा में राजस्थानी भाषा अपनाई है, जिसमें उन्होंने लोकोक्तियों, मुहावरों, कहावतों आदि को जनमानस की भाषा में कहकर अणभैवाणी को सशक्त बनाया है। लोकभाषा अपनाने के कारण अणभैवाणी जनमानस में सरस रूप से पढ़ा जाने लगा। इसी अणभैवाणी को इनके गुरु श्री

कृपाराम ने देखकर अपनी गति को भी इसकी तुलना में कम बताया था।" अतः अणभैवाणी का रामसम्प्रदाय में विशिष्ट स्थान है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 डॉ.वासुदेव शरण अग्रवाल, साहित्य संदेश, संत साहित्य विशेषांक, पृष्ठ 5
2 श्री रामचरणजी महाराज की अणभैवाणी : 1925 प्रस्तावना, पृष्ठ 3
3 केवलराम स्वामी तथा अन्य, श्री रामस्नेही सम्प्रदाय, पृष्ठ 2
4 केवलराम स्वामी तथा अन्य, श्री रामस्नेही सम्प्रदाय, पृष्ठ 43
5 केवलराम स्वामी तथा अन्य, श्री रामस्नेही सम्प्रदाय, पृष्ठ 44
6 स्वामी रामचरण जी महाराज की अणभैवाणी, पृष्ठ 1013
7 श्री पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल, हिन्दी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय, पृष्ठ 352
8 श्री केवलराम स्वामी तथा अन्य, श्री रामस्नेही सम्प्रदाय, पृष्ठ 64
9 श्री केवलराम स्वामी तथा अन्य, श्री रामस्नेही सम्प्रदाय, पृष्ठ 65
10 श्री रामचरण जी महाराज की अणभैवाणी, पृष्ठ 101